लड़ना ही काफी नहीं है, मजदूर तथा वामपंथियों को जीतने के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए[1]

पूरी दुनिया के यूनियन एवं वामपंथी खरबपतियों को हराने में सक्षम हैं। जेन मैकअलेवे इसके लिए मजदूरों को संगठित करने के सबसे बेहतर परम्पराओं से सीखने की जरूरत के बारे में समझा रही हैं। यह परंपरा हमें अपने से असहमत लोगों से बात करके उन्हें अपने पक्ष में करने की सीख देती है।

जेन मैकअलेवे

सितंबर-अक्टूबर महीने में रोजा लक्जमबर्ग स्टीफतुंग द्वारा प्रायोजित 'हड़ताल पाठशाला' में जेन मैकअलेवे के मार्ग दर्शन में सत्तर देशों के हजारों कार्यकर्ताओं एवं यूनियन संगठकों ने प्रशिक्षण में भागीदारी की। जेकोविन के एरिक ब्लांक ने मैकअलेवे से इस पाठशाला के मुख्य सबक के बारे में बातचीत की। इस दौरान संगठित मजदूरों के बीच इस परंपरा के हाशिये पर पहुँचने के कारणो पर रोशनी डाली गयी। साथ ही मजदूर वर्ग की राजनीति का पुनर्निर्माण करने तथा यूनियनों को बेहतर बनाने के लिए अपनाए जाने वाले तरीकों पर चर्चा की गयी।

एरिक ब्लांक (एबी) : क्या आप हड़ताल स्कूल के बारे में बात कर सकते हैं? इसमें किन लोगों ने हिस्सा लिया एवं इसका मुख्य मकसद क्या था?

जेएम : कुछ हद तक आम हड़ताल तथा हड़ताल के विषय में ज्यादा से ज्यादा हो रही चर्चा के मद्देनजर हम लोगों ने हड़ताल स्कूल का आयोजन किया था। अभी बहुत सारे लोग आम हड़ताल करने की बात कर रहे हैं। हमें संगठित करने के बुनियादी सिद्धांतों एवं व्यापक हड़ताल को अंजाम देने के तरीकों पर बात करने का यही सही समय लगा। इस तरह की व्यापक हड़ताल दक्षिणपंथियों को पस्त करने तथा मजदूर वर्ग के लिए अनुकूल माहौल बनाने में मददगार होगी।

पिछले दो महीनों में हड़ताल स्कूल या हड़ताल कार्यशाला महत्वपूर्ण बनकर उभरा है। इसे फलते-फूलते देखना सचमुच खुशी की बात है। कार्यशाला में सत्तर देशों के हजारों लोगों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण की सामग्रियों का अरबी,स्पेनिश,फ्रेंच,पोर्तुगीस,हीब्रू एवं जर्मन भाषा में अनुवाद किया गया। इसे रोजा लक्ज़मबर्ग स्टीफतुंग ने प्रायोजित किया। आज के समय में रोजा के विरासत को आगे ले जाने एवं हड़ताल तथा व्यापक हड़ताल के विचारों को जिंदा रख पाने का अनुभव बहुत सुखद है।

हमने मजदूरों को संगठित करने के बुनियादी उसूलों को हड़ताल करने के लिए सक्षम तथा तैयार यूनियन बनाने के साथ जोड़ते हुए पाठ्यक्रम तैयार किया। लेकिन इसके साथ भूमि पर जोतदारो के अधिकार एवं पर्यावरण मुद्दे पर बने संगठन भी इसका उपयोग कर रहे हैं।

काफी लोग मुझे मेल कर रहे हैं जिसमे वे मेरे लेख के विषयों को समझने की इच्छा जता रहे हैं। मेरे लिए सबका जवाब देना मुश्किल हो रहा है। मैंने इन लोगों,जिनमें बहुत सारे लोग पढे लिखे नहीं हैं,के लिए रोजा लक्ज़मबर्ग स्टीफतुंग के साथ साझेदारी करते हुए साल में कई बार जाकर पढ़ाने का निर्णय किया। इस बार हड़ताल पाठशाला के लिए हमने लोगों को समूह के रूप में पंजीयन करने के लिए कहा। हड़ताल के लिए तैयार होना किसी व्यक्ति का मामला नहीं है,यह समूह का मामला है जो मिलकर संगठन बना सकते हैं। वे छोटे से समूह से शुरू करते हुए इसे अंजाम दे सकते हैं।

[1] प्रस्तुत लेख रोज़ा लक्समबर्ग द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के बारे में है

आमूल-चूल बदलाव की राजनीति नीचे से ऊपर तक बदलने के इर्द-गिर्द पर केन्द्रित है। लेकिन हड़ताल पाठशाला में इस साझा विचार के साथ ढांचा आधारित संगठन बनाने की प्रतिबद्धता भी दिखती है। क्योंकि सिर्फ लड़ना ही काफी नहीं है,हमें संघर्ष करके विजय हासिल करना है। इसके लिए हमें संगठित करने के बुनियादी सिद्धांतो को सीखना है एवं बार-बार सीखना है।

एबी: हड़ताल स्कूल में दिये गए विशेष प्रशिक्षण के एक विशेष तर्क को आपने अपनी किताब 'नो शॉर्टकट'में प्रस्तुत किया है। इसमें आपने 'संगठित' करने एवं 'लामबंद' करने में अंतर किया है। क्या आप इस अंतर को समझा सकते हैं एवं आपकी नजर में यह अंतर इतना महत्व क्यों रखता है।
जेएम : इन दोनों के अंतर को खासकर वामपंथी एवं प्रगतिशील तबके के लिए समझना जरूरी है। लामबंद करने का मतलब अपने समर्थकों से कार्यवाही के लिए बातचीत करना होता है। किसी चुनाव में या हड़ताल या किसी विरोध में लोगों को लामबंद करने का मतलब आपसे सहमत लोगों को लामबंद करना होता है। लेकिन लामबंद करना संगठित करना नहीं होता। यह पहले से आप के विचार से सहमत लोगों को कार्यवाही करने के लिए कहना है। वामपंथी लामबंद करने के लिए बहुत समय खर्च करते हैं।

आप मुझे गलत मत समझिए। हकीकत में हमें लामबंद करने के काम में ज्यादा व्यवस्थित होकर बेहतर करने की जरूरत है। लेकिन हड़ताल के लिए लोगों को लामबंद करने के पहले 90 प्रतिशत मजदूरों को उसके लिए तैयार करना जरूरी है। संगठित करने का काम पर्याप्त रूप से हुआ है या नहीं,यह हड़ताल के पक्ष में मतदान से पता चलता है।

संगठित करने का काम ज्यादा कठिन है, इसके बारे में समझदारी भी बहुत कम है एवं यह आकर्षक भी नहीं है। उदाहरण के लिए अमेरिका में ठोस एवं कारगर हड़ताल को अंजाम देने के लिए एवं मजदूरों द्वारा उठाई गई मांगो को पूरा करवा पाने के लिए आपको 90 प्रतिशत मजदूरों को हड़ताल में शामिल करवाना होगा। इसलिए लॉस एंजिल्स एवं शिकागो में शिक्षकों ने बड़ी जीत हासिल की। इस मुकाम को पाने के लिए कठोर मेहनत की जरूरत है। काम करने वाले लोगों में जितनी विविधता होगी उतना ही उन्हें नस्लीय,लैंगिक, शरणार्थी के रूप में उनकी अलग-अलग स्थिति,काम के शिफ्ट की भिन्नता जैसी पहचान को पाटकर एकजुट करना ज्यादा पेंचीदा होगा।

इसलिए ताकत हासिल करने तथा हड़ताल के लिए मजदूरों को तैयार करने में हड़ताल के निर्णय से असहमत मजदूरों से संवाद करने का क्या तरीका अपनाया जाय... यह सवाल जरूरी हो जाता है। अधिकांश लोग जिनमें अधिकांश समाजवादी भी शामिल हैं,नहीं समझते कि हम महज हड़ताल की अपील नहीं कर सकते। यह इंसाफ की लड़ाई में हम से सहमत लोगों का दायरा बढ़ाने एवं उन्हें तैयार करने का सवाल है।

संगठक को रोज सबेरे उठकर किस तरह से उनसे असहमत लोग या वे लोग जो उनके साथ असहमत होने का दावा करते हैं, के साथ संवाद बनाने के बारे में सोचना पड़ता है। ये लोग निश्चित रूप से हमारे सोशल मीडिया से जुड़े नहीं हैं, ना ही ये लोग हमारी बैठकों में आते हैं। निश्चित रूप से ये लोग हमारे साथ नहीं है। यही इस स्कूल में चर्चा का मूल विषय है। इस स्कूल में हम हड़ताल को सौ प्रतिशत सफल करने के उपायों के बारे में विचार करते हैं। इसका मतलब आप उन लोगों के साथ संवाद करने के लिए काफी समय लगा रहे हैं जो लोग आपसे जुड़ना नहीं चाहते हैं या ऐसे लोगों के साथ संवाद में आपकी कुशलता मायने रखती है। इसलिए संगठित करने एवं लामबंद करने के अंतर को समझाना जरूरी है। आपसे पूरी तरह से असहमत लोगों को अपने पक्ष में लाने के लिए कुशलता सीखने पर ध्यान देने की जरूरत है। इससे सफल हड़ताल को अंजाम देने के लिए जरूरी एकजुटता एवं एकता हासिल किया जा सकता है।

एबी : संगठित करने की इतनी मजबूत परंपरा को अमेरिका के साथ-साथ पूरी दुनिया ने क्यों भुला दिया ?
जेएम: यह अच्छा सवाल है। लेकिन मैं इसे थोड़ा अलग तरह से रखना चाहूँगा। मेरे विचार में यह परंपरा खो नहीं गई बल्कि इसे दंडित किया गया,जेल में कैद किया गया (अलग-अलग देशों में इससे अलग तरह से निपटा गया) या आंदोलन से इसका खात्मा किया गया।

अमेरिका में आप 1947 के यूनियन विरोधी टफ्ट-हार्टलेय विधेयक एवं मेकर्थी दौर को इस परंपरा के लिए नए मोड़ के रूप में देख सकते हैं। यह वही दौर था जब पूँजीपतियों को मजदूर वर्ग द्वारा सभी नस्ल तथा दोनों लिंग के मजदूरों को एकजुट करने का वास्तविक डर समझ में आने लगा था। इसी दौरान कुछ ट्रेड यूनियनों के साथ साँठगांठ करके इस परंपरा को खतम करने की ठोस कोशिश की गई। इसी परंपरा ने 1930 के दशक में मजबूत यूनियनें खड़ी की थीं।

इन यूनियन नेताओं ने मजदूर आंदोलन के सबसे ज्यादा क्रांतिकारी हिस्से का सरकार द्वारा खात्मा करने में जानबूझकर साथ दिया एवं वे समझ नहीं पाए कि यही पूंजीवादी ताकत भविष्य में उनकी यूनियनों एवं उनके सदस्यों की जिन्दगी तबाह कर देगी या उसे कमजोर कर देगी। इन नेताओं ने सोचा था कि सामान्य यूनियन गतिविधि चालू होने पर मजदूर उनके साथ जुड़े रहेंगे एवं यूनियनों को हमेशा संस्थानिक सुरक्षा मिलती रहेगी। यह सत्ता के काम करने के तरीकों एवं लोगों की सोच के बारे में बड़ी गलत समझदारी थी।

हड़ताल स्कूल में हम उन तरीकों को लोगों तक पहुंचा रहे हैं जिन्हे हमने अपने प्रतिभाशाली नेताओं से सीखा है। ये लोग मजदूर आंदोलन की वास्तविक परंपरा के वाहक थे एवं हेल्थ केयर वर्कर्स यूनियन में शामिल थे। इस परंपरा को मजदूर आंदोलन से निष्काषित किया गया। आप पूरी दुनिया में ऐसा होते हुए देख सकते हैं। संगठित करने के इस बेहतर तरीके का उपयोग पूरी दुनिया में हो रहा है। इसलिए अलग-अलग तरह के देशों में बहुत सारे राजनीतिक नेताओं को जेल में डाला जाता है एवं उनकी हत्या भी कर दी जाती है। सबसे कारगर नेतृत्व को हर कीमत पर आंदोलन से दूर करने की कोशिश की जाती है। इसलिए आज यह तरीका सीखना हमारे लिए जरूरी है।

एबी: क्या वामपंथी एवं समाजवादी इस तरीके का उपयोग मजदूरों को यूनियनों में संगठित करने के अलावा वर्गीय राजनीति के लिए संगठित करने में कर सकते हैं ?
जेएम: काम की जगहों पर लोगों को अनुशासित एवं ढांचा आधारित संगठनो में संगठित करने का तरीका एवं उसूल सामान्यतः मजबूत वामपंथी ताकत बनाने के लिए उपयोगी है। इसमें कई सीख है।
पहला तो मूलभूत सिद्धान्त है। क्या आप दिन में ज्यादा समय आप से असहमत लोगों से बात करने में लगाते हैं? आप अगर वर्गीय राजनीति के बारे में गंभीर हैं तो इसका जवाब हाँ होना चाहिए। यह पहला रणनीतिक चयन है। क्या आप अपना पूरा समय जिला के अस्पताल या स्कूल की इकाई में बिताते हैं जहां लोग आप से पूरी तरह से सहमत हैं एवं जहां आपकी संख्या काफी अच्छी है? अगर आप हड़ताल को अंजाम देने के लिए यूनियन बना रहे हैं तो आपको ऐसी जगह पर ध्यान देना चाहिए जहां सही में आपका विपक्ष है एवं जहां लोग आप से सहमत नहीं हैं। यह एक मजबूत वामपंथी ताकत बनाने पर भी लागू होती है।
दूसरा महत्वपूर्ण सवाल इसे करने के तरीके से संबन्धित है। अतीत में अमेरिका के संगठित वामपंथ से मैंने मुंह मोड़ लिया था। मैं जब भी वामपंथी सम्मेलन में जाता तो गोरे लोगों को पर्चा बांटते हुए पाता। ये पर्चा चार फॉन्ट के होते थे जिनमें इनकी राजनीतिक लाइन रहती थी। इस तरह से नस्लीय एवं लैंगिक समस्या का हल करते हुए वर्ग आधारित कारगर आंदोलन का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

आपको बात करने वाले को सराहना एवं समझना चाहिए। आप को समझना चाहिए कि उनकी समझदारी

आप से मेल नहीं खा रही है क्योंकि उनकी सामाजिक स्थिति आप की स्थिति से पूरी तरह से अलग है। यही समझदारी संगठक को कार्यकर्ता से अलग करता है। हम जानते हैं कि हमारा काम धीरज रखना है एवं बात करने वाले की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखने की जरूरत है। उसकी सोच उस तरह की होने के कारण को समझना जरूरी है। आप उसे सही समझदारी पर पहुँचने में मदद कर सकते हैं एवं उसे समझा सकते हैं कि वह एक दूसरे तरह का देश चाहता है एवं दूसरी तरह की राजनीतिक -आर्थिक व्यवस्था चाहता है। लोगों की राजनीतिक समझ में बदलाव उन्हें प्रवचन देकर, उनपर अपनी बात थोपकर या उनके बारे में अपनी राय बनाकर नहीं किया जा सकता।

एबी: मैं ने कुछ लोगों को दावा करते सुना है कि आप के द्वारा सिखाए गए तरीके सिर्फ यूनियन नेताओं एवं उनके कार्यकर्ताओं के लिए प्रासंगिक है,इससे जमीनी स्तर से मजदूर आंदोलन को बदलने का कोई रास्ता नहीं निकलता। मेरी नजर में यह आलोचना सही नहीं है। समाजवादियों द्वारा मजदूर आंदोलन को कारगर तरीके से विकसित करने तथा उसे बदलने के सवाल के साथ हड़ताल स्कूल में सिखाये गए तरीकों के बीच संबंध के बारे में आप क्या सोचते हैं।

जेएम: आप रणनीति के तहत किसी जगह पर काम करते हैं एवं इसके कारण वहाँ काम कर रहे यूनियन के ढांचे का हिस्सा हो सकते हैं। आप पूरे देश की स्वास्थ्य सेवा उद्योग का जायजा लेकर समझते हैं कि कौन से आठ शहर पूरी व्यवस्था को ठप कर सकते हैं एवं आप रणनीति के तहत किसी यूनियन के ढांचे का हिस्सा नहीं बनते हैं। हमारे देश के ये दोनों तरीके अच्छे हैं।

मेरे लिए जरूरी सवाल यह है कि क्या आप संगठक के रूप में अपनी भूमिका समझते हुए लोगों को क्रांतिकारी राजनीतिक शिक्षा दे रहे हो या नहीं। क्या आप लोगों को कुशल बना पा रहे हो? हमें लोगों की सामाजिक स्थिति को समझने एवं उसे स्वीकार करने से इसे शुरू करना होगा। यह लोगों के प्रति सम्मान है एवं इसी मूल्यबोध एवं काम करने के तरीके से आप किसी भी जगह पर यह काम कर सकते हैं।

रणनीतिक उद्योगों में कार्यकर्ताओं का काम करना अच्छी बात है लेकिन इसे लेकर अति-उत्साही होना नुकसान दायक हो सकता है। हमने कठिन काम करने का कौशल सीखने के लिए हड़ताल स्कूल आयोजित किया है। यह कोई बहुत जटिल विज्ञान नहीं है, लेकिन फिर भी यह कौशल है जो आपको अपने काम की जगह पर लोगों को संगठित करने में मदद कर सकता है या आप बाहर से लोगों को संगठित कर सकते हैं। जीत मायने रखती है, इसलिए काम करने का तरीका एवं कौशल की सराहना करना जरूरी है।
हमने हड़ताल स्कूल का आयोजन कार्यकर्ताओं को उनसे असहमत लोगों को अपने पक्ष में करने के लिए मुश्किल संवाद में काम आने वाले तरीके एवं कौशल से परिचित करने के लिए किया। साथ ही हमने उन्हे अपने से असहमत लोगों से संवाद करने पर ध्यान केन्द्रित करने के महत्व को समझाया।
हम आम हड़ताल एवं उसे अंजाम देने को लेकर सामूहिक रूप से बात कर रहे हैं। यही बात अधिक व्यापकता में वर्गीय राजनीति के लिए सच है। लोग मुझसे यूनियनों को किस तरह से बदला जाय ,पर कक्षा लेने का आग्रह करते हैं। मैं उन्हे बताता हूँ कि इसके लिए भी उसी कौशल की जरूरत है। अगर आप अपने स्थानीय यूनियन को बदलने के लिए बहुमत का समर्थन नहीं जुटा पाते तो आपको आम हड़ताल का आह्वान नहीं करना चाहिए।

यूनियनों को बदलने के लिए भी इसी कौशल की जरूरत है। आप को बहुमत या बहुत ज्यादा बहुमत जुटाने का तरीका सीखना होगा। शिकागो एवं लॉस एंजिल्स का असली सबक यही है। अपने साथ काम करने वाले अधिकांश लोगों को मौजूदा ट्रेड यूनियनों से अलग तरह के यूनियन की जरूरत को समझा पाना इस दिशा में बढ़ाया गया पहला कदम है।

हड़ताल स्कूल में हमने नेतृत्व पहचान, असहमत लोगों से मुश्किल संवाद में सफल होने के तरीके, मजदूरों के लिए सबसे ज्यादा जरूरी मुद्दे को पहचानना एवं बहुमत की और सामूहिक ज्ञापन लिखने के तरीके के बारे में सीखा। इन सभी का मकसद जीत का रास्ता तलाश करना है।